❍ 14 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗"मेरा तो एक बाप" - यह पाठ पक्का किया ?∗

➢➢ ∗"हीयर नो ईविल... सी नो ईविल... टॉक नो ईविल" - की धारणा का पालन किया ?∗

➢➢ ∗कंट्रोलिंग पॉवर द्वारा स्वयं को कण्ट्रोल कर फुल स्टॉप लगाया ?∗

➢➢ ∗हर संकल्प में दृढ़ता की विशेषता रही ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे विदेही बापदादा को देह का आधार लेना पड़ता है, बच्चों को विदेही बनाने के लिए। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते, विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बन करके कर्म कराओ। ∗यह देह करनहार है, आप देही करावनहार हो, इसी स्थिति को 'विदेही स्थिति' कहते हैं। इसी को ही फॉलो फादर कहा जाता है। बाप को फॉलो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव!∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं होली हँस हूँ"*

〰✧ सदा होली हंस बन गये - ऐसा अनुभव करते हो? होली हंस हो ना! तो हंस क्या करता है? हंस का काम क्या होता है? (मोती चुगना) और दूसरा? दूध और पानी को अलग करना। *एक है ज्ञान रत्न चुगना अर्थात् धारण करना और दूसरी विशेषता है निर्णय शक्ति की विशेषता। दूध और पानी को अलग करना अर्थात् निर्णय शक्ति की विशेषता। जिसमें निर्णय शक्ति होगी वो कभी भी दूध की बजाय पानी नहीं धारण करेगा। दूध की वैल्यु पानी से ज्यादा है। तो दूध और पानी का अर्थ है व्यर्थ और समर्थ का निर्णय करना।* व्यर्थ को पानी समान कहते हैं और समर्थ को दूध समान कहते हैं। तो ऐसे होली हंस हो? निर्णय शक्ति अच्छी है? कि कभी पानी को दूध समझ लेते, कभी दूध को पानी समझ लेते? व्यर्थ को अच्छा समझ लें और समर्थ में बोर हो जायें। नहीं।

〰✧ तो होली हंस अर्थात् सदा स्वच्छ। हंस सदा स्वच्छ दिखाते हैं। स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तो अभी स्वच्छ बन गये ना। मैलापन निकल गया या अभी भी थोड़ा-थोड़ा है? थोड़ा-थोड़ा रह तो नहीं गया? कभी मैले के संग का रंग तो नहीं लग जाता? कभी-कभी मैले का असर होता है? तो स्वच्छता श्रेष्ठ है ना। मैला भी रखो और स्वच्छ भी रखो तो क्या पसन्द करेंगे? स्वच्छ पसन्द करेंगे या

मैला भी पसन्द करेंगे? *तो सदा मन-बुद्धि स्वच्छ अर्थात् पवित्र। व्यर्थ की अपवित्रता भी नहीं। अगर व्यर्थ भी है तो सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं कहेगे। तो व्यर्थ को समाप्त करना अर्थात् होलीहंस बनना।*

〰✧ *हर समय बुद्धि में ज्ञान रत्न चलते रहें, मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा तो व्यर्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना। व्यर्थ है पत्थर। कभी भी अगर व्यर्थ आता है तो दु:ख की लहर आती है ना। परेशान तो होते हो ना कि ये क्यों आया? तो पत्थर दु:ख देता है और रत्न खुशी देता है।* अगर किसी के हाथ में रत्न आ जाये तो परेशान होगा या खुश होगा? खुश होगा ना। अगर कोई पत्थर फ़ेक दे तो दु:ख होगा। तो बुद्धि द्वारा भी पत्थर ग्रहण नहीं करना। सदा ज्ञान रत्न ग्रहण करना। एक-एक रत्न की अनगिनत वैल्यु है! आपके पास कितने रत्न हैं? अनगिनत हैं ना! रत्नों से भरपूर हैं, खाली तो नहीं हैं? कभी भी बुद्धि को खाली नहीं रखो। कोई न कोई होम वर्क अपने आपको देते रहो।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ अब तो घर जाना है? (कब जाना है?) *समय कभी भी बता के नहीं आयेगा, अचानक ही आयेगा।* जब समझेंगे समीप है तो नहीं आयेगा। जब समझने से थोडे अलबेले होंगे तो अचानक आयेगा।

〰✧ आने की निशानी अलबेलेपन वाले अलबेलेपन में आयेंगे, नहीं तो नम्बर कैसे बनेंगे? फिर तो सब कहें - हम भी अष्ट हैं, हम भी पास हैं। लेकिन थोडा बहुत अचानक होने से ही नम्बर होंगे। बाकी *जो महारथी हैं उन्हों को टचिंग आयेगी।*

〰✧ लेकिन बाप नहीं बतायेगा। *टचिंग ऐसे ही आयेगी जैसे बाप ने सुनाया।* लेकिन बाप कभी एनाउन्स नहीं करेंगे। एक सेकण्ड पहले भी नहीं कहेंगे कि एक सेकण्ड बाद होना है। यह भी नहीं कहेंगे। नम्बरवार बनने हैं, इसलिए यह हिसाब रखा हुआ है। अच्छा।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ और कुछ भी याद न हो, हर समय एक ही बात याद हो 'मेरा बाबा'। *क्योंकि मन व बुद्धि कहाँ जाती है? जहाँ मेरा-पन होता है। अगर शरीर-भान में भी आते हो तो क्यों आते हो? क्योंकि मेरा-पन है। अगर 'मेरा बाबा' हो जाता तो स्वत: ही मेरे तरफ बुद्धि जायेगी। सहज साधन है - 'मेरा बाबा'।* मेरा-पन न चाहते हुए भी याद आता है। जैसे-चाहते नहीं हो कि शरीर याद आवे, लेकिन क्यों याद आता है? मेरा-पन खीचता है ना, न चाहते भी खींचता है।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रावण को भगाकर, जयजयकार से अशोक वाटिका में जाना"*

➳ _ ➳ मीठे मधुबन में मीठे बाबा के कमरे में बेठी हुई मै आत्मा... प्यारे बाबा की यादो में मन्त्र मुग्ध हूँ... और अपने मीठे भाग्य के बारे में सोच सोच कर मुस्करा रही हूँ... प्यारे बाबा का दिल से शुक्रिया कर रही हूँ... कि *प्यारे बाबा की बाँहों में आकर, मेरा जीवन कितना खुबसूरत, मीठा और प्यारा हो गया है.*.. देह के सारे जंजालों से निकल मै आत्मा... सुखो में झूमती, गाती आनन्द में मुस्कराती अपनी सुखो की जन्नत की ओर बढ़ती ही जा रही हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को दुखो से मुक्त कराकर, सुखधाम का मालिक बनाते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा की यादो से इस देह की दुनिया और विकारो के जंजाल से छूटकर... मीठे सुखो की दुनिया में मुस्कराना... *रावण रुपी विकारो की सदा की विदाई कर... प्रेम, सुख, शांति की अशोक वाटिका में मौज मनाना है.*..

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से अथाह सुखो की दौलत अपनी बुद्धि झोली में भरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपकी मीठी प्यारी

यादो ने मुझ आत्मा को *विकारो के जंगल से निकाल, सुख और खुशियो भरे फूलो संग महकाया है*... मै आत्मा देहभान से निकल, अपने सत्य आत्मिक आनन्द के नशे में डूबकर... अशोक वाटिका में जा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को सुंदर देवताई जीवन का राज समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मीठे बाबा की यादे ही सतयुगी जीवन का आधार है... इन यादो में गहरे डूबकर जनमो के दुखो से मुक्त होकर... अनन्त सुखो के हकदार बनो... *मीठे बाबा के सारे गुण और खजाने... अपनी बाँहों में भरकर,बड़ी ही शान से, हँसते मुस्कराते, जयजयकार से सुख और आनन्द की दुनिया के मालिक बनो..*."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से सुखो के गहरे राज समझकर कहती हूँ :- * "मीठे प्यारे दुलारे बाबा... मै आत्मा आपकी यादो भरी गोद में... असीम सुखो को अपने भाग्य में भरती जा रही हूँ... आत्मिक भाव में डूबकर, देह के आकर्षण और विकारो से परे होकर... *जयघोष से देवताओ सा सुंदर जीवन, अपनी तकदीर में आपसे लिखवाती जा रही हूँ.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी यादो में विकर्माजीत बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे.... अपने मीठे भाग्य के नशे में डूबकर सदा के लिए आनन्दित हो जाओ... *21 जनमो का खुबसूरत देवताई भाग्य पा रहे हो, इस मीठी खुमारी से भर जाओ.*.. प्यारे बाबा की पिता, टीचर, सतगुरु रूप में पाकर विकारो के दागो से मुक्त होकर, मीठे सुखो के अधिकारी बन रहे हो...

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने लाडले मीठे बाबा को गले लगाते हुए कहती हूँ :- * " मेरे सच्चे साथी बाबा... आपने अपनी गोद में बिठाकर, गले लगाकर, मुझ आत्मा का कितना प्यारा भाग्य जगाया है... मै आत्मा *देह के दुखो से छूटकर, अनन्त सुखो की स्वामिन् बन रही हूँ... जयजयकार से मीठे सुखो के स्वर्ग में प्रवेश कर रही हूँ..*."मीठे प्यारे बाबा को अपने दिल के उदगार समर्पित करके, मै आत्मा... स्थूल जगत में आ गयी...

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- किसी भी चीज में ममत्व नही रखना है*"

➳ _ ➳ इस मृत्युलोक में हर मनुष्य आज मौत के साये में जीवन जी रहा है। मौत सबके सिर पर मंडरा रही है। बच्चे, बूढ़े, जवान किसी का कुछ पता नही कब शरीर छूट जाए। *जीवन की इस कड़वी सच्चाई को सहर्ष स्वीकार करती हुई मैं स्वयं से ही सवाल पूछती हूँ कि मृत्यु की शैया पर लेटा इंसान जिसे यह बोध है कि अब जल्दी ही उसकी जीवन कहानी का अंत होने वाला है तो क्या वो इस नश्वर संसार की किसी भी चीज से मोह रखेगा!* समय के गम्भीर इशारे भी बार - बार यह चेतावनी दे रहें है कि मौत सिर पर है तो क्या मृत्यु से पहले मैंने उस अवस्था को पा लिया जो मुझे सम्पूर्णता तक ले जाये! क्या मैं नष्टोमोहा बन गई! क्या इस देह और देह के विनाशी सम्बन्धों से मेरा ममत्व समाप्त हो गया!

➳ _ ➳ मन ही मन स्वयं से सवाल करके अपनी चेकिंग करते हुए मैं अनुभव करती हूँ कि सम्पूर्णता की उस अवस्था तक पहुँचने के लिए ब्रह्मा बाप समान बेहद की वैराग्य वृति को धारण कर मुझे नष्टोमोहा बन सबसे ममत्व निकालना ही होगा और यह तभी होगा जब मोह की रग झूठे सम्बन्धो से निकल केवल एक बाबा के साथ जुड़ी हुई होगी। *बाबा के साथ सर्व सम्बन्धो की सुखद अनुभूति ही सबसे ममत्व निकालने का आधार है*। यह संकल्प मन मे आते ही अपने प्यारे बाबा के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभव की सुखद यादें स्मृति में आने लगती है। *साथी, दोस्त, साजन, बाप सभी सम्बन्धो के रूप में बाबा से मिलने वाला अथाह स्नेह याद आते ही मन उनसे मिलने के लिए बेचैन हो उठता है*।

➳ _ ➳ बाबा से मिलने की लगन सेकण्ड में मुझे उनके समान विदेही स्थिति में स्थित कर देती है। आत्मिक स्मृति में स्थित होते ही स्वयं को देह और देह के हर सम्बन्ध से मैं न्यारा अनुभव करने लगती हूँ। देह, देह की दुनिया और देह से जुड़े सभी सम्बन्ध मुझे झूठे लगने लगते है। इसलिये *इन सबसे किनारा कर अपने खुदा दोस्त, साजन, साथी से मिलने के लिए मैं विदेही बन उनके धाम की ओर चल पड़ती हूँ*। आत्माओं की निराकारी दुनिया जहाँ यह नश्वर देह और देह से जुड़ी किसी भी वस्तु का कोई संकल्प भी मन मे नही उठता। *ऐसे अथाह शान्ति से भरपूर अपने शिव पिता के धाम शान्तिधाम में मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ। यहाँ पहुंचते ही गहनशान्ति की अनुभूति मुझ आत्मा को तृप्त और सन्तुष्ट कर देती है*।

➳ _ ➳ शान्ति की इस दुनिया में, शान्ति के सागर अपने शिव साथी की सर्वशक्तियों की किरणों की छत्रछाया के नीचे बैठ शान्ति की गहन अनुभूति करने के बाद मैं आत्मा उनके बिल्कुल समीप पहुँच कर उन्हें टच करती हूँ। *टच करते ही सर्वशक्तियों की रंग बिरंगी किरणो का फव्वारा पूरे वेग से मुझ आत्मा पर प्रवाहित होने लगता है। सर्वशक्तियों के फव्वारे से आ रही शीतल फुहारें मुझ आत्मा के ऊपर पड़ते ही मुझे शीतलता की अति सुखद अनुभूति से सरोबार कर देती हैं*। अतींद्रिय सुख की अनुभूति में मैं डूब जाती हूँ । गहन सुखमय स्थिति का अनुभव करके, बाबा की सर्वशक्तियों को स्वयं में समाहित कर, शक्तिशाली बन कर अब मैं उनसे विदाई ले कर कर्म करने के लिए वापिस कर्मभूमि पर लौट आती हूँ।

➳ _ ➳ अपने कर्मक्षेत्र पर आकर, शरीर रूपी रथ पर विराजमान हो कर, मैं ब्राह्मण आत्मा अब कर्मेन्द्रियों से हर कर्म करते इस बात को सदैव स्मृति में रखती हूँ कि इन आँखों से दिखाई देने वाली हर चीज अब समाप्त होने वाली है। *मौत सिर पर है। यह स्मृति मेरे अंदर वैराग्य की भावना उतपन्न कर, सबसे ममत्व निकालने में मुझे सहयोग दे रही है। देह और देह के सम्बन्धों से मैं अब सहज ही नष्टोमोहा बनती जा रही हूँ*। अब मेरे सर्व सम्बन्ध केवल एक

बाबा के साथ हैं। मेरे हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म में केवल बाबा की याद समाई है। *बाबा की स्वर्णिम किरणों का छत्र निरन्तर अपने ऊपर अनुभव करते हुए, सबसे ममत्व निकाल, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में अब मैं सदैव मगन रहती हूँ*

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं कन्ट्रोलिंग पावर द्वारा स्व को कन्ट्रोल कर फुलस्टॉप लगाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सदा समर्थ आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा हर संकल्प में दृढ़ता की विशेषता धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनती हूँ ।*
✺ *मैं विशेष आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *ब्राह्मण जीवन अर्थात् खुशी की जीवन।* कभी-कभी बापदादा देखते हैं, कोई-कोई के चेहरे जो होते हैं ना वह थोड़ा सा.... क्या होता है? अच्छी तरह से जानते हैं, तभी हंसते हैं। तो बापदादा को ऐसा चेहरा देख रहम भी आता और थोड़ा सा आश्चर्य भी लगता। मेरे बच्चे और उदास! हो सकता है क्या? नहीं ना! *उदास अर्थात् माया के दास। लेकिन आप तो मास्टर मायापति हो। माया आपके आगे क्या है? चींटी भी नहीं है, मरी हुई चींटी। दूर से लगता है जिंदा है लेकिन होती मरी हुई है।* सिर्फ दूर से परखने की शक्ति चाहिए। जैसे बाप की नालेज विस्तार से जानते हो ना, ऐसे माया के भी बहुरूपी रूप की पहचान, नालेज अच्छी तरह से धारण कर लो। वह सिर्फ डराती है, जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना तो उनको माँ बाप निर्भय बनाने के लिए डराते हैं। कुछ करेंगे नहीं, जानबूझकर डराने के लिए करते हैं।

➳ _ ➳ ऐसे माया भी अपना बनाने के लिए बहुरूप धारण करती है। जब बहुरूप धारण करती है तो आप भी बहुरूपी बन उसको परख लो। परख नहीं सकते हैं ना, तो क्या खेल करते हो? युद्ध करने शुरू कर देते हो हाय, माया आ गई! और युद्ध करने से बुद्धि, मन थक जाता है। फिर थकावट से क्या कहते हो? माया बड़ी प्रबल है, माया बड़ी तेज है। कुछ भी नहीं है। *आपकी कमजोरी भिन्न-भिन्न माया के रूप बन जाती है। तो बापदादा सदा हर एक बच्चे को खुशनसीब के नशे में, खुशनुमा चेहरे में और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त और सदा खुशी के खजानों से सम्पन्न देखने चाहते हैं।*

✺ *ड्रिल :- "माया को मरी हुई चींटी समझ सदा खुशनसीब के नशे में रहने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा एकांत में शांत स्थिति में बैठी हुई... अपनी जीवन यात्रा पर एक नजर दौड़ाती हूँ... मैं देख रही हूँ कि जीवन यात्रा में जो भी खूबसूरत पल आये... भगवान हर पल, हर क्षण मेरे साथ थे... और जीवन के चैलेंजिंग क्षणों में मैं आत्मा... स्वयं को ईश्वर की गोदी में महफूज देख रही हूँ... यह सब देख कर *ईश्वर के प्रति मेरे मन में अगाध स्नेह उमड़ रहा है... ईश्वरीय स्नेह में मेरे नयन भीग रहे हैं...*

➳ _ ➳ प्रभु स्नेह में भीगी हुई मैं आत्मा... अपने प्यारे शिवबाबा को अपने बिल्कुल समीप देख रही हूँ... *उनकी शक्तियों का, प्यार का जल अजस्त्र धारा की तरह मुझ पर बरसता जा रहा है... मैं आत्मा ईश्वरीय स्नेह में डूबती जा रही हूँ*... मैं परमात्म प्यार से सराबोर होती जा रही हूँ... मैं स्वयं को ईश्वरीय रंग में रंगा हुआ देख रही हूँ...

➳ _ ➳ कितना सुंदर है मेरा यह मरजीवा जन्म... *मेरा यह ब्राह्मण जीवन खुशियों से भरा जीवन है... मैं आत्मा बाबा की शक्तियों और सहयोग से... माया के हर रूप पर विजय प्राप्त करती जा रही हूँ... मैं मास्टर मायापति बन रही हूँ...* माया कैसा भी विकराल रुप धारण करके आवे... लेकिन मुझ आत्मा को हलचल में नहीं ला सकती... क्योंकि सर्वशक्तिमान बाबा मेरे साथ है... उनके साथ से हर क्षण मेरी विजय होती जा रही है... मैं आत्मा मायाजीत बन रही हूँ...

➳ _ ➳ बाबा अपनी सर्व शक्तियों के खजानों से मुझे भरपूर कर रहे हैं... मीठे बाबा ने अपनी समस्त शक्तियां मुझे दे दी हैं... माया तो मरी हुई चींटी के समान निर्जीव बन गई है... *बाबा से मुझ आत्मा में परखने की शक्ति संपूर्ण रूप में समाती जा रही है... मुझ आत्मा को ज्ञान की गुह्य बातें स्पष्ट हो रही हैं... साथ ही माया के विविध रूपों की भी स्पष्ट परख, स्पष्ट पहचान होती जा रही है*... माया तो सिर्फ डराने के लिए आती है, वास्तव में उसमें कोई भी शक्ति नहीं है...

➳ _ ➳ मैं परख शक्ति के द्वारा माया के हर रूप को परख पा रही हूँ... हर कमजोरी से स्वयं को मुक्त अनुभव कर रही हूँ... वह कमजोरी ही माया के विभिन्न रुप धारण कर आती थी और मैं आत्मा उसे युद्ध करने में अपनी शक्तियां गंवा रही थी, मन-बुद्धि इस युद्ध में शिथिल होती जा रही थी... लेकिन अब *हर प्रकार की कमजोरी पर जीत पाकर मैं आत्मा... अपनी खुशनसीब स्थिति में हूँ... अपने श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ प्राप्तियों के गीत गुनगुना रही हूँ... खुशी की खुराक से मैं आत्मा तंदुरुस्त हो रही हूँ... खुशी के खजानों से भरपूर हो रही हूँ...* अपनी इस खुशकिस्मत अवस्था में खुशनुमा चेहरे और चलन से... सर्व आत्माओं को खुशी का खजाना बांटती जा रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔